VAID'S ICS LUCKNOW

IAS/PCS/PCS(J)

Estd :1988

डेली करेंट अफेयर्स मई –2019

(30th May)

Topic: For prelims and mains:

ब्रिटेन और मॉरीशस के बीच Chagos द्वीप समूह पर विवाद :

समाचार में क्यों? संयुक्त राष्ट्र महासभा (United Nation General Assembly – UNGA) ने हाल ही में एक अबाध्यकारी संकल्प (a non-binding resolution) पारित किया है जिसमें ***इंग्लैंड को कहा गया है कि वह हिन्द महासागर में स्थित चागोस द्वीपसमूह को मॉरिशस को लौटा दे।***

महत्वपूर्ण तथ्य

- विदित हो कि यह मामला ***अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय में गया था।*** वहाँ भी कहा गया था कि इंग्लैंड को चाहिए कि वह चागोस द्वीपों पर अपना नियंत्रण यथाशीघ्र समाप्त कर दे क्योंकि ये द्वीप इंग्लैंड के पुराने मॉरिशस उपनिवेश से विधिसम्मत रूप से अलग नहीं हुए हैं।

विवाद क्या है? :

- ***मॉरिशस के स्वतंत्र होने के तीन वर्ष पहले ब्रिटेन ने चागोस द्वीपों को 1965 में मॉरिशस से अलग कर दिया था। 1967 से 1973 तक इन द्वीपों के 1,500 निवासियों को धीरे–धीरे अपना घर छोड़ने के लिए विवश कर दिया गया था*** जिससे कि इनमें सबसे बड़े द्वीप डिएगो गार्सिया को अमेरिका को सामरिक हवाई अड्डा बनाने के लिए लीज पर दिया जा सके. विदित हो कि आज डिएगो गार्सिया अमेरिका का एक प्रमुख सैन्य अड्डा है।
- ***2016 में कई मुकदमों के बाद डिएगो गार्सिया की लीज को 2036 तक बढ़ा दिया और यह घोषणा की कि जो द्वीपवासी बाहर कर दिए गये हैं, उनको वापस नहीं आने दिया जाएगा।*** 2017 में मॉरिशस ने संयुक्त राष्ट्र

को प्रार्थना पत्र देकर इस बात में सफलता पाई कि मॉरिशस से चागोस द्वीपों को अलग करने के कार्य की वैधता पर अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय से परमर्श मन्तव्य माँगा जाए।

- मॉरिशस का दावा है कि ब्रिटेन ने चागोस द्वीपों को छोड़ने के लिए ***उसे इस शर्त पर विवश किया था कि वह मॉरिशस को स्वतंत्रता दे देगा।***

मॉरिशस के दावे का आधार :

- मॉरिशस का चागोस द्वीपों पर दावा मूलतः आत्म निर्धारण के अधिकार से सम्बंधित है। उसने ***न्यायालय को स्पष्ट कहा है कि इन द्वीपों का पृथक्करण 1960 में पारित संयुक्त राष्ट्र संकल्प संख्या 1514 (औपनिवेशक घोषणा) का सीधा उल्लंघन है*** क्योंकि इसमें कहा गया है कि औपनिवेशिक ***लोगों को आत्म-निर्धारण का अधिकार है और किसी भी स्थिति में स्वतंत्रता देने के पहले किसी उपनिवेश को बाँटा नहीं जा सकता है।***

निर्णय का निहितार्थ :

- यह सच है कि अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय के द्वारा दिए गये परामर्श मंतव्य बाध्यकारी नहीं होते हैं, परन्तु ऐसे मन्तव्य के कई मायने भी होते हैं। इस मन्तव्य से भविष्य में होने वाले समझौतों के समय मॉरिशस की स्थिति सशक्त होगी और साथ ही ब्रिटेन पर चागोस द्वीपों को छोड़ने का अंतर्राष्ट्रीय दबाव बनेगा।

****

Topic: For prelims and mains:

करेंसी चेस्ट :

- ***समाचार में क्यों?*** भारतीय रिजर्व बैंक बड़े-बड़े आधुनिक करेंसी चेस्टों को यह अनुमति देने की योजना बना रहा है कि वे ***गैर-चेस्ट वाले बैंकों की शाखाओं के द्वारा जमा किये गये नकद पर सेवा शुल्क को वर्तमान 5 रू प्रति 100 नोटों के पैकेट से बढ़ा कर 8 रू प्रति पैकेट तक कर सकते हैं।*** इस वृद्धि के लिए वही करेंसी चेस्ट पात्र होंगे जो एक बड़े आधुनिक करेंसी चेस्ट के रूप में वर्गीकृत होने के लिए आवश्यक न्यूनतम मानकों को पूरा करते हैं।

करेंसी चेस्ट क्या है?

- ***केन्द्रीय रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया का सबसे प्रमुख काम देश में नई-पुरानी करेंसी का संचार करना है***। इसमें ***नई करेंसी और नए सिक्कों का देशभर में वितरण, पुरानी करेंसी को रिसाइकल करना और सभी बैंकों में एकत्र हुए अत्यधिक कैश को अपने पास रखने का काम किया जाता*** है।

- इन सभी काम को करने के लिए रिजर्व बैंक को देशभर में कई खजाना बनाना पड़ता है जिसे वह करेंसी चेस्ट कहता है। इस ***करेंसी चेस्ट या कुबेर के खजाने को देशभर कई जगहों पर बनाया जाता है जिससे रिजर्व बैंक का करेंसी वितरण काम आसानी से किया जा सके।***

करेंसी चेस्ट की भूमिका :

- देशभर में करेंसी के संचार को बनाए रखने के लिए मौजूदा समय में रिजर्व बैंक के पास लगभग 4,075 करेंसी चेस्ट हैं. इसके अतिरिक्त सिक्कों का संचालन करने के लिए उसके पास 3,746 बैंक शाखाएँ हैं जो छोटे सिक्कों के लिए डिपो का काम करते हैं।
- ये चेस्ट देशभर में फैले हुए हैं क्योंकि संचार के साथ–साथ इन खजानों में किसी भी सामान्य बैंक में जमा कराए गए रुपयों (कैश रिजर्व रेशियो) को भी रखा जाता है।
- करेंसी चेस्ट को देशभर में स्थापित करने के लिए रिजर्व बैंक प्रमुख सरकारी बैंक स्टेट बैंक ऑफ इंडिया का सहयोग लेता है. इसके अलावा इस काम में 6 सहयोगी बैंकों, सभी नैशनलाइज्ड बैंक, प्राइवेट सेक्टर के कुछ चुने हुए बैंक, 1 विदेशी बैंक, 1 कोऑपरेटिव बैंक और ग्रामीण बैंक को भी शामिल किया जाता है. इस काम को करने के रिजर्व बैंक अपने देशभर में फैले 18 ब्रांच या इशू ऑफिस के जरिए करता है।

नए करेंसी चेस्ट के लिए निर्गत निर्देश :

- करेंसी चेस्ट के लिए ***वज्रगृह का क्षेत्रफल 1,500 वर्गफुट होगा। जो शाखाएँ पहाड़ी और दुर्गम क्षेत्र में हैं, वहाँ के वज्रगृह का क्षेत्रफल न्यूनतम 600 वर्गफुट होगा।***
- नए चेस्ट में प्रत्येक दिन 6 लाख नोटों के प्रसंस्करण की क्षमता होनी चाहिए. जो चेस्ट पहाड़ी और दुर्गम क्षेत्र में हैं, उनके लिए यह क्षमता ***21 लाख नोट प्रतिदिन*** की होगी।
- करेंसी चेस्ट में 1,000 करोड़ अधिशेष की सीमा होगी. इस सीमा में स्थानीय वास्तविकताओं और तर्कसंगत सीमाओं के आधार पर रिजर्व बैंक विवेकानुसार कमी–बेसी कर सकता है।

****

Topic: For prelims and mains:

आर्टेमिस अभियान :

समाचार में क्यों? हाल ही में नासा ने ***आर्टेमिस अभियान के लिए एक कैलंडर प्रकाशित कर दिया है***। विदित हो कि इस कार्यक्रम के अंतर्गत ***50 वर्षों के बाद मनुष्य को चाँद पर भेजा जाना है*** और इसके लिए ***आठ प्रक्षेपण होंगे तथा 2024 तक चंद्रमा की कक्षा में एक छोटा स्टेशन स्थापित किया जायेगा।***

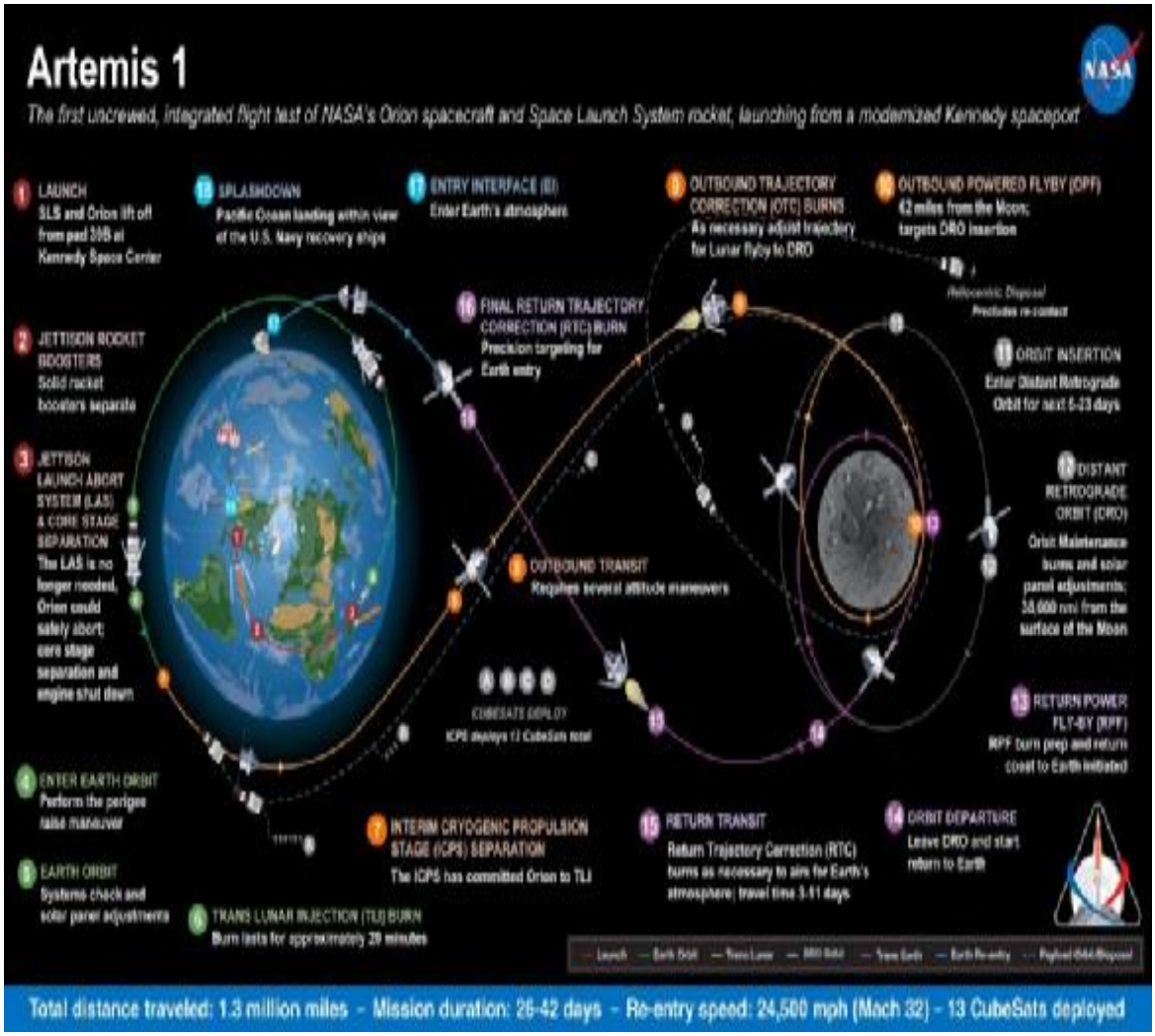

आर्टेमिस अभियान क्या है?

- ARTEMIS का पूरा नाम है – Acceleration] Reconnection] Turbulence and Electrodynamics of the Moon's Interaction with the Sun- इसका नाम ग्रीक पौराणिक कथाओं के अनुसार, चंद्रमा की देवी, आर्टेमिस, अपोलो की जुड़वाँ बहन पर पड़ा है।
- इस अभियान में ***दो अन्तरिक्षयान छोड़े गये थे – P1 और शुरू-शुरू में ये दोनों अन्तरिक्षयान पृथ्वी के प्रकाशपुंज*** **(aurora)** का अध्ययन करने के लिए पृथ्वी की कक्षा में छोड़े गये थे।
- ***उस समय इस अभियान का नाम थेमिस था। बाद में इन दोनों अन्तरिक्षयानों को चंद्रमा की ओर मोड़ दिया गया जिससे कि ये अपनी शक्ति खोने से बच सकें.***

- नए अभियान से वैज्ञानिक यह आशा करते हैं कि वे इन विषयों के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त कर सकेंगे – ***चंद्रमा और पृथ्वी के लेग्रेंज बिंदु, सौर पवन, चंद्रमा का प्लाज्मा वेक और पृथ्वी के चुम्बकीय पुच्छ तथा चंद्रमा की अपनी दुर्बल चुम्बकीयता पर सौर पवन का प्रभाव।***
- आर्टेमिस (ARTEMIS) अभियान का उपयोग कर NASA के वैज्ञानिक इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि चंद्रमा के घूर्णन में जो गाढ़े रंग के और हल्के रंग के विशिष्ट पैटर्न बनते हैं, वे सौर पवन और चंद्रमा की पर्पटी के चुम्बकीय क्षेत्रों के कारण होते हैं।

****

प्रलिम्स के लिए तथ्य

❖ Indo-Myanmar coordinated patrol (IMCOR) :

- 2019 का भारत–म्यांमार समन्वित गश्ती का आयोजन चल रहा है। यह इस प्रकार की ***आठवीं गश्ती*** है।
- इसमें दोनों ***देशों की नौसेनाएँ सम्मिलित होती हैं*** और आतंकवाद, ***मानव तस्करी, पशु हत्या, अवैध मछली मारना, नशीले द्रव्यों का व्यापार जैसी अवैध गतिविधियों*** का समाधान करने का प्रयास किया जाता है।
- ऐसी गश्तियाँ सबसे पहले ***मार्च 2013*** में आरम्भ हुई है।

****

VAID'S ICS LUCKNOW IAS/PCS/PCS(J)